गाधिराज को पुत्र साधि सब मित्र त्रु बल।
दान कृपान विधान वश्य कीन्हीं भुवमण्डल॥
कै मन अपने हाथ जीति जग इन्द्रियगन अति।
तपबल याही दहि भये क्षत्रिय तें ऋषिपति॥
तेहि पुर प्रसिद्ध केशव, सुमति काल अतीतागतनि गुनि।
तहँ अद्भुत गति पगु, धारियो बिश्वामित्र पवित्र मुनि ॥24॥

शब्दार्थ—गाधिराज = गाधि नाम एक गज। साधि = वश में करके मित्रशत्रु बल = मित्र और शत्रुओं की शक्ति। कृपान = तलवार, युद्ध। भुवमंडल = सारा संसार। कै = यहाँ तक कि। सुमति = विद्वान्। काल अतीतागतिनि गुनि = भूतकाल और भविष्यत काल का अच्छी तरह से विचार। अद्भुत गति = शीघ्रता से।

प्रसंग—गाधिराज के पुत्र विश्वामित्र का परिचय कवि ने इन पंक्तियों में दिया है।

व्याख्या—विश्वामित्र ने सारे मित्रों को और शत्रुओं के बल को दान देकर तथा युद्ध के द्वारा वश के करके सारे भूमंडल को अपने वश में कर लिया था। यहाँ तक कि उसने संसार में रहते हुए ही अत्यन्त चंचल इन्द्रिज-समूह को और मन को भी

अपने हाथ में ले लिया था; अर्थात् इन पर पूर्णतया अधिकार कर लिया था। इसीलिए वे अपने तप के बल से इसी शरीर को धारण किये हुए क्षत्री से ऋषिपति बन गये थे। केशव कवि कहते हैं कि ऐसे पवित्र एवं सुमति मुनि विश्वामित्र ने भूत और भविष्यत काल को अच्छी तरह विचार कर अर्थात् यह सोचकर कि प्रभु ने जिन राक्षसों को मारने के लिए अवतार लिया था, उनका मृत्यु-काल अब सन्निकट है, प्रसिद्ध नगर अयोध्या की ओर शीघ्रता से प्रस्थान किया।

विशेष—1. विश्वामित्र के इस प्रकार विचारने की बात तुलसीदास ने भी कही है—

'गाधि-तनय-मन चिन्ता व्यापी। हरि बिनु मरिहि न निसिचर पापी।
तब मुनिवर मन कीन्ह विचारा। प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा।'

—रामचरितमानस, बालकाण्ड

2. 'अद्भुत गति पगु' का एक अर्थ 'अनुभूत गति वाले पैर' भी हो सकता है जो विश्वामित्र के मन के हर्षातिरेक को सूचित करता है, क्योंकि हर्ष होने पर पैरों की गति भी अजीब-सी बन जाती है। विश्वामित्र के हर्ष का कारण था—राक्षओं के नाश की सन्निकटता।

3. पौराणिक कथाओं में विश्वामित्र को वर्णन अनेक बार आता है। कहते हैं कि ये क्षत्री-वंश में उत्पन्न हुए थे, किन्तु अपने तपोबल से महर्षि बन गये थे। अपनी इस उपलब्धि पर इनको दम्भ था। इनका दम्भ देखकर एक दिन ब्रह्मा इनका परिहास कर बैठे जिससे रुष्ट होकर इन्होंने अपनी अलग सृष्टि बनानी आरम्भ कर दी। सर्वप्रयम इन्होंने नारियल का पेड़ बनाया जिसे देखकर संसार में त्राहि-त्राहि मच गई। ब्रह्मा ने तब इनसे क्षमा-याचना की और इन्होंने अपनी सृष्टि की रचना बन्द कर दी।